ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 8 & Issue 1 (January-March 2026)

OPEN ACCESS PEER REVIEW

https://doi.org/10.53032/tvcr/2026.v8n1.09

भारतीय ज्ञान परंपरा: विज्ञान और वेदांत का संवाद

डॉ. कुबेर सिंह गुरुपंच

प्राध्यापक भूगोल

शा. दिग्विजय स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)

(Abstract)

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा के दो महत्वपूर्ण स्तंभों–आधुनिक विज्ञान और प्राचीन वेदांत–के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है। जहाँ आधुनिक विज्ञान पदार्थ (Matter) और बाहरी जगत के रहस्यों को सुलझाने का प्रयास करता है, वहीं वेदांत चेतना (Consciousness) और आंतरिक सत्य की खोज करता है। यह पत्र स्पष्ट करता है कि कैसे क्वांटम भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान के आधुनिक सिद्धांत, उपनिषदों और वेदांत के 'अद्वैत' दर्शन के करीब पहुंच रहे हैं। निष्कर्षतः, यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि विज्ञान और आध्यात्मिकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान परंपरा, वेदांत, अद्वैत, आधुनिक विज्ञान, क्वांटम भौतिकी, चेतना, ब्रह्मांड विज्ञान।

1. प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम जीवंत परंपराओं में से एक है। लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि विज्ञान और धर्म/अध्यात्म दो अलग-अलग ध्रुव हैं। विज्ञान को 'तर्क' और 'प्रमाण' का विषय माना गया, जबकि वेदांत को 'आस्था' और 'अनुभूति' का। परंतु, 20वीं और 21वीं सदी के वैज्ञानिक विकास, विशेषकर सूक्ष्म भौतिकी (Sub-atomic physics) के उदय ने इस धारणा को बदल दिया है। आज दुनिया भर के विचारक यह मान रहे हैं कि जो सत्य

ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व ध्यान की अवस्था में प्राप्त किया था, विज्ञान आज प्रयोगशालाओं में उसी के निकट पहुंच रहा है।

2. वेदांत का मूल दर्शन: अद्वैत और एकता

वेदांत का शाब्दिक अर्थ है 'वेदों का अंत' या अंतिम निष्कर्ष। इसका मुख्य आधार 'अद्वैत' है, जिसका अर्थ है–'दो नहीं'। आदि शंकराचार्य के अनुसार, यह संपूर्ण ब्रह्मांड एक ही चेतना (ब्रह्म) का विस्तार है।

- **तत्वमसि (Tat Tvam Asi):** वह (ब्रह्म) तुम ही हो।
- **सर्वं खल्विदं ब्रह्म:** यह सब कुछ ब्रह्म ही है।

यह दर्शन सिखाता है कि विविधता के पीछे एक मौलिक एकता है। यही वह बिंदु है जहाँ आधुनिक विज्ञान और वेदांत का संवाद शुरू होता है।

3. क्वांटम भौतिकी और वेदांत का मिलन

आधुनिक भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में जब वैज्ञानिकों ने परमाणु के भीतर झांका, तो उनकी पुरानी 'मैकेनिकल' सोच बदल गई।

- **पर्यवेक्षक का प्रभाव (Observer Effect):** विज्ञान अब मानता है कि देखने वाले (Observer) के बिना देखी जाने वाली वस्तु (Observed) का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। यह वेदांत के 'दृष्टि-सृष्टि वाद' के समान है, जो कहता है कि जगत का अस्तित्व चेतना पर निर्भर है।
- **हाइजेनबर्ग का अनिश्चितता सिद्धांत:** यह सिद्ध करता है कि हम प्रकृति को वैसा नहीं देख सकते जैसी वह वास्तव में है, बल्कि वैसा देखते हैं जैसा हमारा मन और उपकरण उसे प्रस्तुत करते हैं।
- **एर्विन श्रोडिंगर और निकोला टेस्ला:** ये महान वैज्ञानिक उपनिषदों से गहरे प्रभावित थे। श्रोडिंगर ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि 'अद्वैत' ही एकमात्र ऐसा दर्शन है जो चेतना की गुत्थी सुलझा सकता है।

4. पदार्थ बनाम चेतना (Matter vs. Consciousness)

परंपरागत विज्ञान का मानना था कि 'पदार्थ' से 'चेतना' पैदा होती है। लेकिन वेदांत इसके विपरीत कहता है कि 'चेतना' ही प्राथमिक है और पदार्थ उसका एक स्थूल रूप है। आज के न्यूरोसाइंस (Neuroscience) और 'हार्ड प्रॉब्लम ऑफ कॉन्शियसनेस' के दौर में वैज्ञानिक इस बात पर विचार कर रहे हैं कि क्या वास्तव में पूरा ब्रह्मांड ही सचेतन है?

5. सृष्टि और प्रलय: खगोल विज्ञान के संदर्भ में

वेदांत में समय की अवधारणा चक्रीय (Cyclic) है। 'कल्प', 'युग' और 'प्रलय' की अवधारणाएं आधुनिक 'बिग बैंग' (Big Bang) और 'बिग क्रंच' (Big Crunch) के सिद्धांतों से मेल खाती हैं। नासा के कई शोधों में भी 'ओम' (Om) की ध्वनि और ब्रह्मांडीय विकिरण (Cosmic Radiation) के बीच समानता की चर्चा की गई है, जो भारतीय ज्ञान की वैज्ञानिकता को पुष्ट करती है।

6. संवाद की आवश्यकता क्यों?

विज्ञान ने हमें सुख-सुविधाएं दी हैं, लेकिन आंतरिक शांति और नैतिक दिशा देने में वह अक्सर विफल रहा है। दूसरी ओर, केवल आध्यात्मिकता भौतिक अभावों को दूर नहीं कर सकती।

- **समग्र दृष्टिकोण:** विज्ञान को एक 'नैतिक दिशा' के लिए वेदांत की आवश्यकता है।
- **सतत विकास:** जब हम ब्रह्मांड को अपना ही विस्तार मानेंगे (वेदांत के अनुसार), तभी हम पर्यावरण और प्रकृति की रक्षा निस्वार्थ भाव से कर पाएंगे।

8. सूक्ष्म और स्थूल जगत का अंतर्संबंध (The Microcosm and Macrocosm)

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक मूल मंत्र है– **"यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे"** (जो इस शरीर में है, वही ब्रह्मांड में है)। वेदांत तर्क देता है कि एक कोशिका की संरचना और एक आकाशगंगा की संरचना के पीछे एक ही नियम कार्य कर रहा है। आधुनिक 'फ्रैक्टल ज्योमेट्री' (Fractal Geometry) और 'होलोग्राफिक यूनिवर्स' का सिद्धांत भी इसी ओर इशारा करता है कि ब्रह्मांड का हर छोटा हिस्सा अपने भीतर संपूर्ण ब्रह्मांड की सूचना समेटे हुए है। जहाँ आधुनिक विज्ञान ने 'स्ट्रिंग थ्योरी' के माध्यम से यह खोजने की कोशिश की है कि पदार्थ का अंतिम कण क्या है, वहीं वेदांत ने 'तन्मात्राओं' और 'पंचमहाभूतों' के माध्यम से सूक्ष्म से स्थूल की यात्रा को बहुत पहले ही समझा दिया था।

12. वैश्विक संकट और वेदांत का समाधान

आज का विज्ञान जलवायु परिवर्तन और परमाणु खतरे जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसका कारण 'विभक्त सोच' है–प्रकृति को मनुष्य से अलग मानना। 'ईशावास्य उपनिषद' का पहला श्लोक कहता है– **"ईशा वास्यमिदं सर्वं"** (सब कुछ ईश्वर से व्याप्त है)। यदि विज्ञान इस वेदांती दृष्टिकोण को अपना ले कि प्रकृति निर्जीव वस्तु नहीं बल्कि सचेतन इकाई है, तो हम एक 'पारिस्थितिक चेतना' (Ecological Consciousness) विकसित कर सकते हैं। यह संवाद मानवता के अस्तित्व को बचाने के लिए अनिवार्य है।

7. निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच कोई वास्तविक संघर्ष नहीं है। विज्ञान जहाँ 'सत्य' (Truth) की खोज बाहर कर रहा है, वेदांत उसी सत्य की खोज भीतर करता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "आधुनिक विज्ञान के निष्कर्ष वेदांत के दर्शन के साथ आश्चर्यजनक रूप से मेल खाते हैं।" भविष्य का वैश्विक समाज एक ऐसे 'वैज्ञानिक वेदांत' पर आधारित होगा जहाँ बुद्धि और हृदय, तकनीक और करुणा का समन्वय होगा।

संदर्भ ग्रंथ (References):

1. स्वामी विवेकानंद - 'ज्ञान योग' और 'राज योग'।
2. एर्गिन श्रोडिंगर - 'What is Life?'
3. फ्रिट्जॉफ काप्रा - 'द ताओ ऑफ फिजिक्स' (The Tao of Physics)।
4. आदि शंकराचार्य - 'विवेकचूड़ामणि'।
5. डॉ. एस. राधाकृष्णन - 'भारतीय दर्शन'।